HARDIK HARSHADARSHA

OR

A MIRROR OF HEART'S JOYS

Being

A poem written on the occasion of the Diamond Jubilee representing the heartfelt joys of the loyal Indian Subjects on that auspicious day.

BY

UPADHYAYA BADRI NARAYAN CHOWDHRY (PREMGHAN).

Author of "Yuvarajashisha" on the advent of H. R. H. the Prince of Wales, "Bharat Bhagyodaya" on the Queen's assumption of the title of the Empress of India and a "Chitra Kavya" on the celebration of the last Jubilee, Editor of a monthly journal entitled "Ananda Kadambini" and a weekly periodical "Nagri Nirad" and writer of various other poems, dramas &c. &c.

MIRZAPUR.

Printed at the Ananda Kadambini Press.
June 1900.

॥ श्रीः ॥

हार्दिक हर्षादर्श।

अर्थात्

भारत राजराजेश्वरी की हीरक जुबिली अर्थात्
सकुशल साठ वर्ष राज्य सुख भोगने के
महोत्सव में भारतीय प्रजा का
हार्दिक हर्ष निरूपक
काव्य।

—:o:—

श्रीमान् युवराज प्रिन्स आफ् वेल्स के भारत में विराजमान होने पर
"युवराजाभिषेक" और भारत राजराजेश्वरी पद ग्रहण महोत्सव पर
"भारत भाग्योदय" विगत जुबिली के अवसर पर एक "चित्र
काव्य" के कवि और समर्पणकर्त्ता तथा अन्य अनेक गद्य
पद्य नाटकादि ग्रन्थों के रचयिता, "आनन्द काद-
म्बिनी" मासिक पत्रिका और "नागरी नीरद"
साप्ताहिक पत्र के सम्पादक

प्रेमघनोपनामक

उपाध्याय श्री बदरी नारायण शर्म्मा चौधरी

द्वारा निर्मित और प्रकाशित।

मिरजापुर
आनन्दकादम्बिनी यन्त्रालय में मुद्रित हुआ।
सन् १८९९ ई०।

संशोधन ।

पृष्ठ ६ के प्रथम टिप्पणी की पूर्ति ।

इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्च वरुणस्य च ।
चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः ॥
यस्मादेषां सुरेन्द्राणां मात्राभ्यो निर्म्मितो नृपः ।
तस्मादभिभवत्येष सर्व्वभूतानि तेजसा ॥
तपत्यादित्यवच्चैष चक्षूंषि च मनांसि च ।
न चैनं भुवि शक्नोति कश्चिदप्यभिवीक्षितुम् ॥
सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्म्मराट् ।
स कुवेरः स वरुणः स महेन्द्रः प्रभावतः ॥
बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः ।
महती देवता ह्येषा नररूपेण तिष्ठति ॥
एकमेव दहत्यग्निर्नरं दुरुपसर्पिणम् ।
कुलं दहति राजाग्निः सपशुद्रव्यसञ्चयम् ॥
यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे ।
मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्व्वतेजोमयो हि सः ॥
तस्माद्धर्म्मं यमिष्टेषु स व्यवस्येन्नराधिपः ।
अनिष्टञ्चाप्यनिष्टेषु तं धर्म्मं न विचालयेत् ॥

मनुसंहिता ।
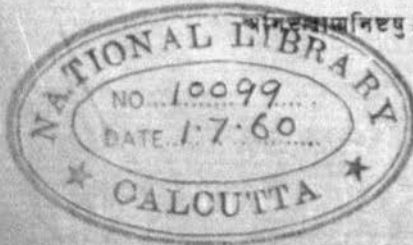
भूमिका

यह कविता हीरक जुबिली के शुभ अवसर पर लिखी गई थी, परन्तु सन्निकट समय पर भूकम्प होने से उसके वर्णन ने इसे उचित अवसर पर मुद्रित होकर प्रकाशित होने न दिया! विवशतः हीरक जुबिली महोत्सव के आनन्द प्रदर्शनार्थ एकत्रित उस महासभा में जोकि अत्यन्त समारोह के संग यहाँ के "टाउन हाल" में एकत्रित हुई थी, केवल इसका कुछ अंश सुनाया और मुद्रित पत्र रूप में बाँटा जा सका, और यही संकल्प रहा कि पश्चात् पुस्तकी पूर्ण मुद्रित होने पर श्रीमती भारतेश्वरी की सेवा में समर्पित होगी, परन्तु समय व्यतीत होने पर प्रकाशित करने में उचितानुचित विचार एवम् और कई कारणों ने इसे अब तक ऐसा अवसर न दिया कि मुद्रित होकर भी प्रकाशित हो। किन्तु जैसा किसी कवि का कथन है, कि—

"ज़बाँ प ला सुख़ने ख़ूब को न रख दिल में।
नहीं है क़द्र गुहर की अगर सदफ़ में रहा॥"

अन्त को यही सिद्धान्त हुआ कि यह श्रम और संकल्प व्यर्थ क्यों रहे, यदि कहीं कुछ भी पाठकों के मनोरञ्जन का हेतु हो, तो सभी समीचीन है। निदान समस्त रसिकजन प्रार्थना पूर्वक यह राजभक्ति पूरित प्रबन्ध यहीं श्रीमती भारत राजराजेश्वरी महारानी के शुभ अवसर पर सज्जनों की सेवा में उप-

स्थित किया जाता है; कदाचित् बे समय का राग भी राग से रोचक हो साफल्य का हेतु हो।

यद्यपि बे समय के राग की उक्ति यदि इसके कुछ अंश पर चरितार्थ होती, तो अधिकांश पर समय के राग का सा आनन्द आना भी सर्वथा सम्भव है। क्योंकि न केवल इसे हीरक जुबिली ही से एकमात्र सम्बन्ध है, वरञ्च भारत और इंगलैण्ड के सामान्य इतिहास और वर्तमान दशाओं से भी, जो कि अद्यावधि यथावत पूर्ण रूप से विद्यमान हैं; एवम् ग्रन्थ रचना प्रणाली भी इसी ढंग की है कि जो अवसर बीतने पर भी पढ़ने के योग्य रहे, तथापि इसके निर्णय का अधिकार केवल सहृदय सज्जनों को है, न कि हमको। यथा,—

काव्यप्रपञ्चचञ्चू रचयति काव्यं न सारविद्भवति।
तरवः फलानि सुवते विन्दति सारं पतंगसमुदायः॥

मिरजापुर
२४ मई १९८० ई०।

क्षमा प्रार्थी—
ग्रन्थकर्त्ता।

PREFACE.

This little poem was chiefly composed on the auspicious occasion of the Diamond Jubilee but it could not be published at that time as the verses on the terrible earthquake which had immediately preceded it did not quite receive their finishing touches. Only selected portions of it could be read and distributed at the Jubilee celebration which took place with considerable *eclat* in the local Town Hall. It was intended that the poem should be afterwards printed in book form and presented to Her Majesty the Empress of India. But the consideration of the propriety of its publication after the occasion and various other weighty reasons prevailed and could not give a suitable opportunity for its appearance before the public even up to this day. But it has been properly observed by a poet,

"Do not conceal within thy bosom but give tongue to the choicest sentiments of thy heart, for how could the pearl be valued if it lay in the bosom of its shell ?"

At last it was decided that instead of spending [illegible] in vain and altogether supressing the desire for its publication, the poem should be presented to [illegible] public on Her Majesty's Birthday with the request that they would bear with the delay and the defects which the book might contain. It may be

that even this untimely tune may touch some one's heart and thus be the cause of some satisfaction to the author. Although this epithet may be applicable to only a small portion of the poem, it can also be termed a timely air when the major portion of the book is taken into consideration; for the subject matter deals not only with the Diamond Jubilee, but also with the political events of both Indian and British history and the recent political situation which remains entirely unchanged up to this day. Hence it may possibly be a source of pleasure to the readers. Moreover, the plan of the work, its style and diction are such as to suit the tastes of readers even after the passing of the occasion; but still the privilege of scrutiny and criticism is entirely with the readers, and not with me, and therefore it is laid before the public just as it is.

THE AUTHOR.

निवेदन।

अखण्डभूमण्डलोत्तापिप्रतापमार्तण्डारिकुलोलूक-
निकरत्रासिनी निखिलभूपालपूजितप्रशस्तपाद
पद्मिनी श्रीमती महामान्या महाराज्ञी
भारतराजराजेश्वरी विजयिनी श्री
विक्टोरिया देवी की पूज्य सेवा में।

माता !

आज आपके साठ वर्ष पर्य्यन्त सकुशल साम्राज्य सुख भोगने के आनन्दमहोत्सव का मंगलमय दिवस है! ऐसे शुभ अवसर पर भारतीय प्रजा के, जो स्वाभाविक राजभक्त है, हार्दिक हर्ष का भला कहाँ ठिकाना है? फिर उसका सुनाना वा लिख दिखलाना तो कैसे सम्भव है? परन्तु ऐसे शुभ अवसर पर राजभक्ति की प्रबल प्रेरणा से बिना कुछ कहे रहा भी नहीं जाता। अतएव उस हर्ष के आदर्श नाम से इस क्षुद्र काव्य का निर्माण सर्वथा अनुचित साहस होने पर भी क्षमा के योग्य है।

एवम् कविकुलचूड़ामणि शेक्सपियर और बेन जान्सन, महामति मिल्टन, कूपर और गोल्डस्मिथ प्रभृति की अलौकिक रचना चातुरी, तथा गूढ़ और गम्भीर भावों की विलक्षणता से परिचित उच्चाशय चित्त वृत्ति को इस सामान्य प्रबन्ध की ओर झुकाना न केवल हास्यास्पद साहस मात्र, वरञ्च अपराध है; परन्तु क्या किया जाय कि उपायन सदा शक्ति अनसारही होता है। अतः अत्यन्त

नम्रता और भक्ति से सादर समर्पित इस तुच्छोपायन को केवल अपनी विशाल उदारता से अंगीकार कर इसे महत्व सम्प्रदान कर अपनी एक अकिञ्चन प्रजा का मान वर्धन कर कृतकृत्य कीजिए।

मिरजापुर
२२ जून १८८७ ई०

श्रीमती का नितान्त नवमङ्गलाभिलाषी
विनम्र दासानुदास
श्री बदरी नारायण (प्रेमघन)

To

HER MOST GRACIOUS MAJESTY ALEXANDRINA
VICTORIA, BY THE GRACE OF GOD,
QUEEN OF THE UNITED KINGDOM OF
GREAT BRITAIN AND IRELAND,
DEFENDER OF THE FAITH AND
EMPRESS OF INDIA.

May it please Your Most Gracious Majesty,

This day is the grand commemoration of Your most succesful and brilliant reign of 60 years. It is impossible to measure the joy of the hearts of the naturally loyal Indians, and still more difficult to find adequate words for expressing it. But one cannot be dumb on such an occasion as this. And so, though the production of this little piece entitled "A mirror of Heart's Joys" is an adventurous task, it is pardonable.

Moreover, to expect that a mind conversant with the deep and sublime sentiments of the world-renowned Shakespeare, Milton, Ben Jonson, Cowper, Goldsmith and others, would be attracted towards such a little piece as this is not only ridiculous but also presumptuous. But it cannot be helped; for presents depend entirely upon the power and capacity of the presentor. Accordingly, with a sense of deep humility, high regards and loyalty, I beg

to approach Your Majesty with this paltry poem and I hope that Your liberal heart would bestow honour on a common thing as this by Your kind acceptance.

I beg to remain,
With the greatest respect
MADAM,
Your Majesty's most loyal
and faithful subject,
BADRI NARAYAN CHOWDHRY.

MIRZAPUR
22nd June 1897.

॥ श्रीः ॥

हार्दिक हर्षादर्श।

कवित्त।

संकित सत्रु उलूक लुके लखि जासु प्रताप दिनेसहि जानी।
फूली रहै प्रजा कंज सुखी सर देस मै न्याय के नीर अघानी॥
कीरति, यश, परिवार औ राज दराज मैं है "घनप्रेम" को सानी?
देख्यो निहारि विचारि भलैं जग तो सम जाई तुही महरानी!!

दोहा।

विजयिनि श्री विक्टोरिया देवी दया निधान।
करैं तिहारो ईस नित सहित ईसु कल्यान!!
सपरिवार सुखसों सदा रहित आधि अरु व्याधि।
राजहु राज सुनीति सँग प्रजा परम हित साधि!!
कीरति उज्वल रावरी और अधिक अधिकाय।
सारद पूनौ जोन्ह सम रहै छोर छिति छाय!!

रोला छन्द ।

धन्य द्वीप इंगलैण्ड,* नगर लण्डन† सुन्दर वर ।
राज प्रसाद "केनसिंगटन"‡ धनि जाके अन्दर ॥
धन्य "केंट की डचेज़"§ "डूक एडवर्ड" नाम धर ।
लही सुता जिन तुम सी, लाख सुतन सों बढ़कर ॥
धनि अठ्ठारह सौ उन्नीस ईसवी को सन ।
धनि चौबीस मई तुव जन्म दिवस मन रञ्जन ॥
धन्य बीसवीं जून अठारह सौ सैंतिस की ।
बृटेन‖ राज लहि जबै जगाई भाग बृटिश¶ की ॥

तुम सों प्रथम उतै राजे बहु रानी राजे ।
रहे वीर, न्याई, प्रतापिहू बाजे बाजे ॥
पै तुम सों सम्बन्ध कहा उन को महरानी ?
भयो ग्रेट** है ग्रेटब्रिटेन§§ लहि तुहिं अभिमानी ॥

---

* England. अंगरेज़ों का देश।
† London. इंग्लैण्ड की राजधानी।
‡ Kensington Palace. नामक राजभवन।

§ भारतेश्वरी की माता का नाम Victoria Mary Louisa, Duchess of Kent. विक्टोरिया मेरी लूसिया, डचेज़ आफ़ केंट, और उनके पिता का नाम Edward, Duke of Kent. एडवर्ड, ड्यूक आफ़ केंट था।
‖ Britain. अंगरेज़ों के देश का दूसरा नाम।
¶ British. अंगरेज़ जाति।
** Great. बड़ा।

§§ Great Britain. बड़ा बृटेन अर्थात् इङ्गलैण्ड, जो उसका आदि न[illegible] है, और जो ब्रूट या ब्रट नामक प्रथम मनुष्य के निवास के कारण पड़ा [illegible] जाता है।

कहत "एलिज़ाबेथ"* रानी कहँ कोउ आप सम ।
पै अनेक अंसन मैं रही आप सों वह कम ॥
कहँ परिवार, प्रताप, राज, बय, तुम सम पायो ?
कहँ सब प्रजा बृटेन को चित हित बनि अपनायो ?
शान्ति सुखहिं कब लह्यो दूर करि कलह लराई ?
रानी छोड़ि राज राजेसुरि कब कहवाई ?
तेरे हित सुख फल बीजन बोए विधि उन दिन ।
उन्नति अंकुर तासु बढ़ाई. देय ताहि किन ?

नहिँ यूरप,† नहिँ एशिया† लही तोसी रानी ।
अमेरिका† अफ़रिका† आदि की कौन कहानी ?
सुय गुन नामहुँ सों अति अधिक "अलेक्ज़ेन्ड्रीना
विक्टोरिया"‡ महारानी तुम सम नृपती ना ॥
भयो सिकन्दर§ हिन्द राज नहिँ, मस्यो युवाही ।
तेरी विजय पताका जग सब दिसि फहराई ॥

मिटी राज राजत तेरे सब कलह लराई ।
जाति भेद, मत भेद, नीति हित, जो चलि आई ॥
राजा प्रजा दुहूँ को दृढ़ विश्वास दुहुँन पर ।

---

* Elizabeth. इङ्गलैण्ड की एक प्राचीन अति प्रसिद्ध महारानी।

† Europe, Asia, America and Africa. पृथ्वी के चारों महा खण्डों के नाम।

‡ भारतेश्वरी का पूरा नाम Alexandrina Victoria. अलिक्ज़न्ड्रिना विक्टोरिया है, जिसका अर्थ सिकंदर समान विजयिनी किया गया है।

§ Alexander, the Great. अलक्षेन्द्र।

भयो तिहारेहि समय भूलि भय लेस परस्पर ॥
तेरे साधु सुभाय, दयामय नीति विगत छल ।
माता लौं सुत सरिस प्रजा हित करन बानि बल ॥
भई विलाइत प्रजा अभय, स्वच्छन्द, अनन्दित ।
चढ़ि उन्नति के सिखर जगत जन कियो चकित चित ॥
पूरन विद्या, कला, शिल्प, व्यापार, मान, धन ।
लहि अघाय हू गई, लहै तौ हूँ नित नूतन ॥
जासों बृटिश प्रजा तोकहँ चित सों महरानी ।
अपनी मानी, राजभक्ति तो मैं दृढ़ आनी ॥

लह्यो और नृप देसराज छल, बल, कौसल सों ।
पै निज दया सुभाय, न्याय निर्मल के बल सों ।
प्रजा हृदय पर कियो राज तुम सदा विगत भय ।
कियो प्रजा दुख दूर, कियो तिन हित सुख सञ्चय ॥
राख्यो कौन राज राजा बिन दोष इते दिन ?
साँचहुँ साठ बरिस राजीँ इक तुम कलंक बिन ॥

तेरो प्रबल प्रताप सकल सम्राट दबायो ।
खीस बायकै फ़रासीस* जातैं सिर नायो ॥
जरमन† जर मन मारि बनो जाको है अनुचर ।
रूम‡ रूम सम, रूस§ रूस बनि फूस बराबर ॥

---

* France. फ़्रान्स देश का राज्य ।
† German. जरमन देश का राज्य ।
‡ Turkey. रूम देश का राज्य ।
§ Russia. रूस देश का राज्य ।

पाय परसि तुव पारस* पारस के सम पावत ।
पकरि कान अफ़गान† राज पर तुम बैठावत ॥
दीन बनो सो चीन,‡ पीन जापान§ रहत नत ।
अन्य क्षुद्र देशाधिप गन की कौन कहावत ?
जग जल‖ पर तुव राज, थलहु पर इतो अधिकतर ।
सदा प्रकासत, जामैं अस्त¶ होत नहिं दिनकर ॥

---

(२)

तिन सब मैं है मुख्य राज भारत को उत्तम ।
जाहि विधाता रच्यो जगत के सीस भाग सम ॥
जहाँ अन्न, धन, जन सुख, सम्पति रही निरन्तर ।
सबै धातु, पसु, रतन, फूल, फल, बेलि, बृच्छ बर ॥
झील, नदी, नद, सिन्धु, सैल, सब ऋतु मन भावन ।
रूप, सील, गुन, विद्या, कला कुसल असंख्य जन ॥
जिनकी आसा करत सकल जग हाथ पसारत ।

---

* Persia. पारस देश का राज्य ।

† Afghanistan. अफ़ग़ानिस्तान राज्य के निवासियों का नाम ।

‡ China. चीन देश का राज्य ।

§ Japan. जापान देश का राज्य ।

‖ सामुद्रिक पोत सेनादि शक्ति में विशेष प्रबल होने के कारण अंगरेज लोग समुद्र मात्र पर अपना अधिकार और राज्य का अभिमान करते हैं । यथा,— "Britannia rules the waves."

¶ पृथ्वी के सब खण्डों में कुछ न कुछ अंगरेजी राज्य रहने से कहा जाता है कि हमारी महारानी के राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होते ॥

आवृत औरन के न रहे कबहूँ नर भारत ॥
बीर, धर्म्मरत, भक्त, त्यागि, ज्ञानी, विज्ञानी
रही प्रजा सब; पै निज राजा हाथ बिकानी ॥
निज राजा अनुसासन मन, बच, करम धरत सिर।
जगपति* सी नरपति मैं राखति भक्ति सदा थिर ॥
सदा सत्रु सों हीन, अभय, सुरपति छबि छाजत।
पालि प्रजा भारत के राजा रहे विराजत ॥

पै कछु कही न जाय, दिनन के फेर फिरे सब !
दुरभागनि सों इत फैले फल फूट बैर जब !!
भयो भूमि भारत मैं महा भयंकर भारत† !
भये बीरबर सकल सुभट एकहि सँग गारत !!
मरे विबुध, नरनाह, सकल चातुर गुन मण्डित !
बिगरो जन समुदाय बिना पथ दर्शक पण्डित !!
सत्य धर्म्म के नसत गयो बल, विक्रम साहस।
बिद्या, बुद्धि बिबेक बिचाराचार रह्यो जस ॥
नये नये मत चले, नये झगरे नित बाढ़े !
नये नये दुख परे सीस भारत पैं गाढ़े !!
छिन्न भिन्न ह्वै साम्राज्य लघु राजन के कर
गयो, परस्पर कलह रह्यो बस भारत मैं भर ॥

रही सकल जग व्यापी भारत राज बड़ाई !

---

* यथा,—"नराणाञ्च नराधिपम्।"—श्री भगवद्गीता।

† महाभारत का महा युद्ध।

कौन बिदेसी राज न जो या हित ललचाई ?
रह्यो न तब तिन मैं इहि ओर लखन को साहस।
आर्य राज राजेसुर दिगविजयिन के भय बस॥
पै लखि बीर बिहीन भूमि भारत की आरत।
सबै सुलभ समझ्यो या कहँ आतुर असि धारत॥

निज सीमा सन्निकट सिन्ध पञ्जाब पाय के।
पारस को सम्राट* लपकि बैठ्यो दबाय के॥
इहाँ परस्पर कलह रचे आपस के जय हित।
नृपति उपेछे परदेसी अरि लघु गुनि गर्बित॥
निज भाई न लरैं अरि सँग मिलि संक सकाने।
उचित समय की करत प्रतिच्छा रहे भुलाने॥
भरमाला भारत को या बिधि खुल्यो सकल दिस।
औरन कहँ भारत जय आस भई दृढ़ या मिस॥

ताहि जीति ताको सब देस लेन के ब्याजन।
सीधो आयो चलो सहायक लहि खल राजन†॥
प्रबल राज यूनान‡ जगत जेता भारत पर।
विजय पाय लघु, तऊ समझि बल रुक्यो सिकन्दर§॥

---

* सन् ईसवी से प्रायः पांच सो वर्ष पूर्व पारस देश की बड़े बादशाह दारयवुश (Darius Hystaspes) ने पंजाब और सिंध पर अपना अधिकार जमा लिया था।

† जब सिकन्दर पारस राज (Darius Codomannus) दारा को जीत उसका राज लेता काबुल से बढ़ा, तच्छिला का राजा साथ होकर उसे अटक में लिवाया और सुपंग्रिस् राजा आदि ने उसका स्वागत किया!

‡ Greece.

§ Alexander, the great, King of Macedonia.

बहुरि और यूनानी रहे इतै लौ लाये।
पैन राज करि सके लौटि घर गये खिस्याये॥
पुनि शक* लोग अनेक बार आये अरराने।
जीति राज कछु किये, अन्त पै हारि पराने॥

राह खुली लखि फिर तौ चढ़े अरब† के राजे।
लरि जीते कोउ कहूँ, लूटि कोऊ कहुँ भाजे॥
कबहुँ तुरुक, अफ़गान, मुगल आये भारत पर।
लूटि, मारि नर नारिन लै भागे अपने घर!!
कोऊ राज इत किये निपट अन्याय मचाई!
दीन प्रजान सँहारि रुधिर की नदी बहाई!!
हरे मान, धन, धर्म्म, अमित तोरे देवालय!
अनाचार की सीमा नहिँ राखीँ वे निर्दय!!
अमल, प्रफुल्लित देस बनाय मसान भयंकर!
पशु समान करि दियो मूढ़ ह्याँ के सुविज्ञ नर!!

कछु उदारता और न्याय अकबर दिखरायो।
ता कहँ औरँगजेब धोय कै दूरि बहायो॥
तिहि दिन तैँ भारत मैँ फैल्यो असन्तोष अस।
छिन्न भिन्न ह्वै यवन राज बिनसन लाग्यो बस॥

* शक वा सिदियन (Scythian) लोग जो सन् ईस्वी के १०० वर्ष प्रथम मध्य एशिया से आने लगे।

† सन् ६३६ ई० मैं खलीफ़ा उथान ने सामुद्रिक सेना बम्बई के किनारे को ओर भेजा।

बेराजी सी मची रही बहु दिवस यहाँ पर।
बन्यो निपट छबि हीन दीन यह देस निरन्तर॥

तऊ बड़ाई याकी रही दिगन्तन छाई।
धन लालच यूरोपियन गनन हूँ गहि ल्याई॥
चले सबै लै लै जहाज सागर जल नापत।
अगम सिन्धु मैं बिन जाने मग थरथर काँपत॥
मरे कोऊ,* पहुँच्यो कोऊ† पाताल‡ देस पर।
भारत हेरत पायो नूतन, जगत सविस्तर॥
हरषे यद्पि, न पै लालच भारत की छोड़ी।
चले इतै फिरि फिरि जहाज पतवारहिँ मोड़ी॥
भूले, भटके§ कोऊ, कई टापू‖ कोउ पाये।
रुके तऊ नहिँ, सहि सौ सौ साँसत इत आये¶॥

प्रथम फिरंगी* पुनि पहुँचे नर बलन्देज** इत।
आये पुनि अँगरेज सकल विद्या गुन मण्डित॥

---

* Sir Hugh. सर ह्यू आदिक।

† Christopher Columbus. क्रिस्टोफ़र कोलम्बस।

‡ पादतल अर्थात् मारकीन वा अमेरिका देश जो हमारे देश के नीचे है।

§ John Cabot and Sebastian &c. जान कैबट और सिबास्टियन आदि।

‖ Newfoundland, &c. न्यू फौंडलेंड, आदिक।

¶ Vasco-da-Gama. वास्कोडिगामा नामक प्रथम पुरुष यहाँ पहुँचा।

* Portuguese. पोर्चुगल देश निवासी जो प्रथमही यहाँ आने के कारण प्रथम फ़िरङ्गी कहलाये, और अबभी जो उनकी दोगली नसल के लोग ढाका और चिटगांव के समीप रहते फिरङ्गीही कहलाते हैं।

** Holland. औलन्देज अर्थात् डच Dutch. हालेण्ड देश निवासी।

फ़रासीसबासी आये, फिरि तौ उठि धाये।
सब यूरप बासी भारत हित अति अकुलाये॥
सबहिँ ब्याज ब्यापार, चित्त पै राजा करन पर।
सबहिँ सबन सोँ लाग, ईरषा, द्वेष परस्पर॥
लरे देस बासिन सोँ और परस्पर ये सब।
कियो भूमि अधिकार कछू जहँ जो पायो जब॥
रह्यो नहीँ पै राजभोग औरन के भागन।
निज इच्छा अनुसार ईस दीन्यो अँगरेजन॥

'ईस्ट इण्डिया कम्पिनी'* कियो राज काज इत।
कियो समित उतपात होत जे रहे इहाँ नित॥
उचित प्रबन्ध अनेक प्रजा हित वा ने कीन्यो।
आरत भारत प्रजा जियन कछु ढाढ़स दीन्यो॥

पै वाकी स्वारथपरता अरु लोभ अधिकतर।
राख्यो चित नितहीँ निज राज बढ़ावन ऊपर॥
अरु ब्यापार द्वार सोँ लाभ अपार लेन मैं।
उद्यम हीन दीन दुख पै नहिँ ध्यान प्रजा देन मैं॥
ह्याँ की मूढ़ प्रजा के चित को भाव न जान्यो।
हठ करि सोई कियो, जबै जस वा मन मान्यो॥

---

* East India Company अंगरेज़ों की एक व्यापारिक मंडली जो सं० १६०० ई० में भारत में व्यापार करने के लिये बनी थी० जिसमें १२५ साझी, और केवल सात लाख की पूंजी थी; परन्तु क्रमशः उसने इस देश के समस्त साम्राज्य को अपने अधीन कर लग भग एक सौ वर्ष तक यहां राज किया।

दियो त्रस्त करि पूरब हरे मानवन के मन।
समझ्यो जिन ये चाहत नासन जाति, धर्म, धन॥
देसी मूढ़ सिपाह कछुक लै कुटिल प्रजा सँग।
कियो अमित उत्पात,* रच्यो निज नासन को ढँग॥
बढ़्यो देस मैं दुख, बनि गई प्रजा अति कातर।
फेर्यो तब तुम दया दीठ भारत के ऊपर॥

——:o॰o:——

(३)

लैकर राज कम्पिनी के कर सों निज हाथन।
किय सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन॥
रही जु भारत प्रजा कहावत प्रजा प्रजा की।
सो कलंक हरि लियो इन्हैं दै समता वाकी॥
धन्य ईस्वी सन अट्ठारह सौ अट्ठावन।
प्रथम नवम्बर दिवस, सितासित भेद मिटावन॥
अभय दान जब पाय प्रजा भारत हरषानी।
अरु लहि तुम सी दयावती माता महरानी॥
राज प्रतिज्ञा सहित, सान्ति थापन विज्ञापन!
मैं अधिकार अधिक निज पुष्ट विचारि मुदित मन†॥
अति उन्नति आसा उर धरि बिन मोल बिकानी
तेरे हाथनि, मानि तोहि निज साँची रानी॥

* स० १८५७ ई० का महा विद्रोह। Sepoy Mutiny.
† Queen's Proclamation अर्थात् १८५८ का प्रसिद्ध राजाज्ञा पत्र।

करी प्रतिज्ञा जो बहु साँची करि दिखराई।
मुरझी भारत लता फेरि तुमहीं बिकसाई॥
बहुत दिनन सों दुखी रही जो भारत बासी
प्रजा दया की भूखी, न्याय नीर की प्यासी॥
पशु समान बिन ज्ञान, मान बनि रही भरी डर।
फेरि तिन्हैं नर कियो आप लघु दिवस अनन्तर॥
दियो दान विद्या अरु मान प्रजान यथोचित।
अभय कियो सुत सरिस साजि सुख साज नवल नित॥

शुद्ध नीति को राज प्रजा स्वच्छन्द बनायो।
साँचे न्याय भवन मैं खरो न्याय दिखरायो॥
देश प्रबन्ध चतुर, दयालु, न्याई, दुखहारी।
विद्या विनय विवेकवान शासन अधिकारी॥
जे नित हम सब प्रजा हेत नूतन सुख साजत।
हेरि हेरि दुख हरत हरत जासों भय भाजत॥
सत प्रबन्ध दिनकर दिनकर नास्यो रजनी दुख।
धूप शान्ति की फैली लखि बिकस्यो सरोज सुख॥
सूझी साँचो स्वत्व प्रजा को भूलि सीत भय।
अत्याचारी चोर पराने निज परान लय॥

धन्य तिहारो राज, अरी मेरी महरानी!
सिंह, अजा सँग पियत जहाँ एकहि थल पानी।
जहँ दिन दुपहर परत रहे डाके नगरन मैं।
तहँ रच्छक निरखियत पथिक जन के हित बन मैं॥

जहाँ क़ाफ़िले* लुटत रहे सौ यतन किये हूँ ।
जिन दुरगम थल माहिँ गयो कोऊ नहिँ कबहूँ ॥
रेल यान परभाय अँधेरी रातहुँ निधरक ।
अंध, पंगु, निसहाय जात अबला बाला तक ॥
माल करोरन को बिन मालिक पहुँचत निज थल ।
अन्य दीपहूँ पहुँचावत धूआँकस चलि जल ॥
डाक, तार को जो प्रबन्ध तेहि जगत सराहत ।
लाखन रोगिन रोज डाकृर लोग जियावत ॥
जिहि बन केहरि हेरत मत्त मतंगहि डोलत ।
तहाँ बन्यो नव नगर सुखी नर नारि कलोलत ॥
पर्वत अधित्यका† जे रहीं कबहुँ कण्टक मय ।
तहाँ शस्य लहरात बालकहु बिहरत निर्भय ॥
जल बिहीन थल बीच नहर बनि गईं अनेकन ।
सड़क हजारन कढ़ीं छाँह को बृच्छ करोरन ॥
तड़ित,‡ गैस§ परकास राजपथ रजनि सुहाए ।
महा महा नद माहिँ सेतु सुन्दर बँधवाए ॥
बने विश्वविद्यालय, विद्यालय, पाठालय ।

---

* (قافلہ) यात्रियों का समूह। प्रथम जङ्गलों की अधिकता के कारण जङ्गली मार्ग में अकेला दुकेला कोई यात्री चोर, डाकू आदि के डर से नहीं जाता था, वरञ्च बहुत समय तक प्रतीक्षा करके भी समूह बद्ध होकर लोग जाते थे।

† पर्वत के ऊपरी भाग की भूमि। यथा:—"उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्द्धम् अधित्यका।"

‡ Electric-light. बिजली की रोशनी।

§ Gass-light. धूएं की रोशनी।

पावत प्रजा अलभ्य लाभ जिनतें बिन सम्भ्रम ॥
यों बहु भाँतिन करि भारत उन्नति मनभावनि ।
तब उन्नति अपनी कीनी, तुम हिय हरषावनि ॥

---

(४)

हिन्द राजराजेसुरी* बनी तू महरानी !
राजसूय† के हरष उमड़ि दिल्ली इतरानी ॥
भारत के जेते मानी रईस अरु राजे ।
महराजे, नव्वाब, राव, राने छबि छाजे ॥
आय जुरे तहँ साम्राज्य अभिषेक बिलोकन ।
राजभक्ति के भाय भरे अतिसय प्रसन्न मन ॥
तुव अनुसासन लाट "लिटन"‡ प्रतिनिधि के मुख सुनि ।
सीस चढ़ाये सबै स्वत्व निज अधिक पुष्ट गुनि ॥
निज अधीसुरी तुमहिँ सबै चित सों करि माने ।
भये राजराजेस अधीन जानि हरषाने ॥

जौन हिन्द हेरन हित "हेनरी राजा सप्तम§" ।
प्रथम यत्न करि मर्यो पता न लह्यो, गुनि दुर्गम ॥

---

* Empress of India. भारत राजराजेश्वरी वा क़ैसरे हिन्द (قیصر هند) पद ग्रहण ।

† Dehli Durbar Assemblage. दिल्ली का बड़ा शहन्शाही दर्बार ।

‡ Lord Lytton, (Earl of Lytton.) the Governor General of India.

§ Henry VII. इसी ने प्रथम् सं० १४९६ ई० में इधर के मार्ग अन्वेषणार्थ John Cabot जान कैबट के अधीन दो जहाज़ भेजे।

समझि सोई "अष्टम हेनरी*" हेर्यो नहि वाको।
नृपति "षष्ट एडवर्ड†" खोज पायो नहि जाको॥
पता लहन हित जासु मरी "मेरी‡" ललचानी।
करि करि यतन अनेक "एलिज़ाबेथ§" महरानी॥
पता लगायो जासु, पठायो राज दूत‖ इत।
लहन राज अनुमति प्रजान व्यापार करन हित॥
निज व्यापारी प्रजन जोरि मण्डली बनाई।
नाम "ईस्ट इण्डिया कम्पिनी" धरि हरषाई॥
पठयो तिहि व्यापार करन के हित भारत महँ।
इतनेही मैं धन्य मानि उन लियो आप कहँ॥

जिहि व्यापार लाभ लतिका को बीज सुअवसर।
बोयो बिबिधि उपाय "एलिज़ाबेथ" अपने कर॥
"प्रथम जेम्स¶" जिहि यतन अनेकन करि लखि पायो।
होत बीज अंकुरित दूत$ निज सों हरषायो॥

---

* Henry VIII.

† Edward VI. जिसका समय सं० १५५३ ई० में सर हु इधर चला पर बीच ही में मर गया।

‡ Mary.

§ Elizabeth.

‖ Sir John Mildenhall. सर जान मिल्डनहाल।

¶ James I.

$ प्रथम जेम्स ने सं० १६१५ ई० में [Sir Thomas Roe.] 'सर टामस रो' को अपना दूत नियत कर जहांगीर बादशाह के दर्बार में भेजा था, जिस्ने अंगरेजों के व्यापार करने की आज्ञा प्राप्त की।

"प्रथम चार्ल्स*" मन मुदित होत जिहि लख्यो पल्लवित।
प्रजा तन्त्र मैं युगल "क्रामवेल†" निरख्यो बर्धित॥
नृपति "चार्ल्स दूसरो‡" पुष्ट जाकहँ अनुमान्यो।
पाय दहेज§ बम्बई दीप हिये हरषान्यो॥
यद्पि दच्छिना पै सासन आरम्भ मानि मन।
गुन्यो अलभ्य लाभ सत मुद्रा साल स्वल्प धन॥

जाहि 'दूसरो जेम्स‖' नृपति 'विलियम¶' अरु 'मेरी$'।
तैसहिँ रानी "एन्**" मरी भारत दिसि हेरी॥
"प्रथम जार्ज§§" राजहु नहिँ लाभ और कछु पायो।
सोइ वयापार लता फैलत लखि जनम गँवायो॥
जाहि "जार्ज दूसरो‖‖" नृपति बहु दिवस निहारत।
लख्यो हरषि हिय लपटत¶¶ लपकि बिटप बर भारत॥

---

* Charles I. प्रथम चार्ल्स के समय सं० १६४५ ई० में (Gabriel Boughton.) गैब्रियल बौटन ने, जोकि होपवेल नामक जहाज़ का सरजन था, अपनी सेवा के पुरस्कार में शाहजहाँ बादशाह से व्यापार का समय स्वत्व बिना किसी के साझे के कम्पिनी के अर्थ प्राप्त किया।

† Oliver Cromwell and Richard Cromwell.

‡ Charles II.

§ सं० १६६१ ई० में पोर्चुगीज़ राजकुमारी (Catharine of Braganza.) कैथरैन ब्रेगांज़ा के विवाह में Charles II. ने (جہیز) जहेज़ में बम्बई का टापू जो उस समय एक छोटा सा गाँव था, पाया था; जिसे कि उसने सं० १६६८ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को १००) वार्षिक कर पर दे दिया।

‖ James II. ¶ William III. And $ Mary.

** Anne. §§ George I. ‖‖ George II.

¶¶ इसी के समय में सं० १७५७ ई० में [Clive] क्लैव ने पलासी में बङ्गाले के नव्वाब सिराजुद्दौला को परास्त कर विजय पाई, जो अङ्गरेज़ी राज्य का आरम्भ माना जाता है।

"जार्ज तीसरे*" निरख्यो जिहि फैलत सब+ साखन।
भारत तरुवर पर प्रयास बिनहीं छनहीं छन ॥
"चौथो जार्ज‡" जाहि मान्यो हर्षित भारत पर।
फैलि गई दृढ़ रूप नहीं अब सूखन को डर ॥
महाराज "विलियम चतुर्थ§" निज भाग सराहत।
जिहि लतिका में लख्यो कलित कलिकावलि लागत ॥
पै सो राजत राज लिहारेही साँची बिधि।
फैली पूरन रूप होय प्रफुलित, फलि फल‖ निधि ॥

भारत तरु अपनाय कै दियो सौंपि तेरे कर।
"ईस्ट इण्डिया कम्पनी" चातुर मालिनी सुघर ॥
निज घर गई पराय त्यागि निज सकल मनोरथ।
तेरो प्रबल प्रताप दिखायो तिहि सूधो पथ ॥

---

* George III.

\+ इसके समय में अङ्गरेज़ी राज्य स्थापन और वृद्धि को प्राप्त हुआ, और भारत के चारों ओर इनकी विजय दुन्दुभी बजी।

‡ George IV. इनके समय में भी अङ्गरेज़ी राज्य वृद्धि और पुष्टता को पहुँचा।

§ William IV. इसके नाम का अङ्गरेज़ी मुद्रा (سکہ) भारत में प्रचलित हुआ।

‖ यद्यपि भारत में आगेही से खण्डश: अङ्गरेज़ी राज्य स्थापित और पुष्ट हो चुका था, परन्तु वह वास्तव में एकाधिपत्य रूप से पूर्णता और पुष्टता को हमारी वर्त्तमान् राजराजेश्वरी ही के समय में पहुँचा। इन्हीं के समय में अङ्गरेज़ों ने भारत पर अपना निष्कण्टक राज्य माना, क्योंकि यद्यपि पंजाब और अवध की बादशाहतें इन्हीं के समय में अङ्गरेज़ों के हाथ आईं, परन्तु मुगल साम्राज्य और मरहठों का राज्य भी इन्हीं के समय में निःशेष समाप्त हुआ।

"बृटिश इण्डिया*" नाम कियो चरितारथ साँचहु ।
भारत राज अखण्ड लियो, नहिं राख्यो अरि कहुँ ॥
मरे डेढ़ दरजन† जिहि ललचि बृटेन अनुशासक ।
पै नहिँ भारत राज भये कोउ सुयस प्रकासक ॥
ताको नहिँ रानी महरानीहीं तुम केवल ।
भईं राज राजेसुरी यतन बिना भाग्य बल ॥

धन्य ईसवी सन अट्ठारह सौ सतहत्तर !
प्रथम जनवरी दिवस, नवल दिन‡ जो प्रसिद्ध वर !!
कियो नयो दिन जो भारत को बहुत दिनन पर ॥
दियो स्वतन्त्र देस को नाम फेरि याको कर ॥
भईं राज राजेसुरी अलग आप हमारी ।
गईं सुतन्त्र नाम सौँ हम सब प्रजा पुकारी ॥
यह नहिँ न्यून हमारे हित, गुनि हिय हरषानी ।
लगीं असीसन तोहि जोरि ईसहिँ युग पानी ॥

---

(५)

जिन असीस परभाय जसन§ जुबिली¶ दिन आयो ।
पुनि इन भक्त प्रजन को मन औरौ हरषायो ॥

---

* British India. अङ्गरेज़ी भारत अथवा अङ्गरेज़ों का भारत ।
† Dozen. संख्या में बारह ।
‡ New years day. अङ्गरेज़ी वर्ष का प्रथम दिन ।
§ (جشن) आनन्द समारम्भ वा हर्षोत्सव ।
¶ महारानी की प्रथम पचास वर्ष वाली (Jubilee) जुबिली वा पराधंराज्योत्सव जो २१ जून सं० १८८७ ई० को मनाया गया था ।

देन लगौं आसीस फेरि यै होय मुदित मन।
यथा एक बदरी नारायन सुकवि "प्रेमघन*" ॥
ईस कृपा सों और एक† जुबिली तुव आवै!
फेरि भारती प्रजा ऐस हीं मोद मनावै !!

धन्य धन्य यह दिवस, जु पूजी आस हमारी!
भई दूसरी हीरक जुबिली आज तिहारी !!
अब पचास वत्सर‡ हू सुखसों ईस बितै हैं।
जाके अन्तर अवसि कई जुबिली फिरि अय हैं॥
भारत राज भोग की जुबिली होय तिहारी।
ताकी हीरक जुबिली होय अधिक सुखकारी॥
भारत साम्राज्य की जुबिली तब पुनि होवै।
ताकी हीरक जुबिली ह्वै सब संसय खोवै॥
मानव पूरन आयु§ सहित यह जुबिली चारो!
को सुख भोगौ तुम, करि भारत देश सुखारो !!

जब इक अंस असीस ईस दीनी साँची कर।
तब पूरन पूरन की आसा होत अधिकतर॥

---

* ग्रन्थकर्ता का उपनाम।

† उस जुबिली की कविता में,
"S—एस् जुबली तुव और इक देखैं हम सुख साथ।"
"G—जीवहु बरिस पचास तुम औरहु सहित अनन्द।"

‡ "राजहु पचास बरीस औरहु करि जगत मंगलमई !!!"

§ हमारे यहाँ कलियुग में मनुष्य का पूर्णायु १२० वर्ष का माना गया है, महाराणी के पूर्णायु में ये चारों जुबिलियाँ हो सकती हैं।
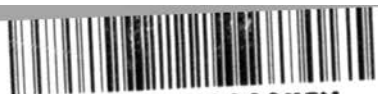
यासों अतिसय हरष हिये हमरे मनभावनि !
यह जुबिली है और चार जुबिली की ल्यावनि !!

यद्‌पि सहजहीं यह हीरक जुबिली अति प्यारी।
लह्यो न जेहि नृप कोऊ विलायत शासन कारी।
नहिं कोउ भारत राज बिदेसी देख्यो यह दिन ॥
इतो राज इतने दिन सुख सों कब भोग्यो किन ?
धन्य तिहारो भाग, नाहिं या मैं कछु संसय !
नहिं तो सम नृप और प्रजा हितकारी निश्चय !!

तब तेरे सुख मैं जौ तेरी प्रजा सुखारी
होय, भला तो अचरज की है बात कहारी ?
अरु पुनि साँचे राजभक्त भारत बासिन के
रहै हरष की सीमा किमि ? नृपही बल जिन के ॥
यही हेतु आनन्द मगन सो भासत भारत
ईति, भीति अरु रोग, सोग सों यद्यपि आरत ॥

---

(६)

पर्‌यो अकाल* कराल चहूँ दिसि महा भयंकर।
जस नहिं देख्यो, सुन्यो कबहुँ कोउ भारतीय नर ॥
कहैं अन्न की कौन कथा ? जब कन्द, मूल, फल,

* Great Famine of 1897. सं० १८९७ ई० का महा दुष्काल जो कि भारतवर्ष के समस्त प्रान्तों में घोर रूप से व्याप्त हुआ जैसा कि कभी सैकड़ों वर्ष से नहीं पड़ा था।

फूल, साग अरु पात भयो दुरलभ इनकहँ भल ॥
हरे हरे बन तृन चरि सूखे बीज घास के।
खाय अघाय न सके किए थल स्वच्छ पास के ॥
दूर दूर के कानन कढ़ि तरु पातन चूसे।
तिन की छालनि छोलि चले जनु सम्पति मूसे ॥
पहुँचे घर लै ताहि कूटि अरु पीसि पकाये।
रुदत वृद्ध बालकन खवाय कोउ भाँति चुपाये ॥
या विधि पसु गन के जीवन आधार हाय हरि।
बिन चारे पसु मारि, जिए कछु दिन संतोष करि ॥
पै जब याहू सों निरास ये भये अभागे !
लंघन करि करि त्राहि, त्राहि हरि टेरन लागे !!

कृषि कारन की होय भयंकर दसा जबै इमि।
भिच्छुक गन के रहैं प्रान फिर तौ भाषौ किमि ?
पेट चपेट चोर, डाकू बनि कितने धाये।
लूटि पाटि जिन किते धनिक जन दीन बनाये ॥
मरे किते धन सोच, किते बिन अन्न, बिना जल।
बिना बसन, गृह, शीत रोग सों ह्वै अति निर्बल ॥
हाहाकार मच्यो चारहुँ दिसि महा प्रलय सम !
बचे भारती नरन जियन की रही आस कम !!

खोय मध्यवित लोग, बसन, भूषन, पसु, गृह, थल।
मान बिबस मरिबो मान्यो भिच्छाटन सों भल ॥
सहि न सके जब भूख पीर कातर हिय ह्वै करि।

सपरिवार करि आतमघात गये सुख सों मरि !!

मरत असंख्य मनुज लखि तेरो धर्म्म आय बस !
मेकडानल[*] के ब्याज दियो जीवन को ढाढ़स !!
उमड़ि मनहुँ पावस घन अन, धन बरसन लाग्यो ।
सूखे धान समान प्रजा हिय हरसन लाग्यो ॥
जिहि जल के बल बढ़े उमड़ि ज्यों नद्दी नारे ।
काज अकाल सँहारक[†] दीन सहायक सारे ॥
लहि जीवन आधार धाय जीवन हित आये ।
चहुँ ओरन सों दीन मीन संकुल अकुलाये ॥
जिहि जीवन बिन जीवन की आसा जिय त्यागे
रहे, सोई जीवन लहि सुख सों जीवन लागे ॥
सोइ जीवन भरि उतिराने सर, ताल, झील सम ।
ठौरहि ठौर बने अनेक दीनालय[‡] उत्तम ॥
बहु जीवन जीवन सम जिन में जीवन लागे ।
अन्ध, पंगु, असहाय, दीन, दुर्बल दुख त्यागे ॥

सुन्दर भोजन, पान[§] पाय बिनही प्रयास के ।
खाय अघाय असीसन लागे प्रति रोमन ते ॥

---

[*] Hono'ble Sir Antony Patrick MacDonnell, the Lieutenant-Governor of N.-W. P. and Chief Commissioner of Oudh. श्रीमान् महाराज सर अंटोनी पैटरिक मेकडोनल लिफ्टिनेंट गवर्नर पश्चिमोत्तर देश और चीफ कमिश्नर अवध ।

[†] Famine relief work.

[‡] Poor house.

[§] State kitchen. अन्नसत्र में ।

बिन दल तरु नहिँ रह्यो ठौर जिहि ठाढ़ होन कहँ ।
पाँय पसारे सोवत वे सुख सोँ भवनन महँ ॥
कम्पित गात, सीत सिकुरे जे रहे दिगम्बर ।
जीयें तेऊ पाय गरम अम्बर* अरु कम्बर ॥
भूख, सीत सोँ कातर ह्वै जे भये रोग बस ।
चारु चिकित्सा लहत तौन हित जौन चहत जस ॥
राह चलत असमर्थ दीन जन दीन अन्न§ धन ।
लटे गिरेहू लादि ल्याय कीनो परिपालन ॥
सपनेहूं तजि याहि काम जिनके कछु नाहीँ
चैन करत दिन रैन असीसत औ तुमकाहीँ ॥

त्योँ असंख्य अज्ञान दीन बालकन अनाथन ।
किये जननि लौँ तेरे अनाथालय‖ परिपालन ॥
प्याय दूध अरु ख्वाय अन्न जिन धाय खेलावत ।
देख भाल हित मेम¶ और मिस$ जिन्के आवत ॥
खेलत खेलन योग्य खेल, झूलत चढ़ि झूलन ॥
पढ़त लिखत, गुन सिखत** गुरुन सोँ आनन्दित मन ।
निज घरहू मेँ रहि ते यह सुख कबहुं न लहते ॥
मातु पिता तिनके कब या बिधि पालन करते ?

---

* Indian Famine Charitable Relief Fund.—Object I.

§ Casual Relief.

‖ Orphanage.

¶ अंगरेज़ी बीबियाँ । $ अङ्गरेज़ी कुमारियाँ ।

** Indian Famine Charitable Relief Fund.—Object II.

खुले चिकित्सालय* बहु ऐसे दीनन के हित।
घरसों अधिक सुपास लहत रोगी जन जहँ नित।
करत डाकूर औषध अरु सेवक सब सेवा।
पावत पथ्य दूध, सागू§, मिस्री अरु मेवा॥
खीय रोग अरु सोग सुखी जाके रोगी गन॥
देत असीस अघात नाहिँ तोकहँ प्रसन्न मन!!

जे धन हीन कुलीन दीन बिन काज परे घर।
बिना आय कोउ भाँति खाय बिन अन्न रहे मर॥
निराधार विधवा परदा वारी जे नारी।
बिना अन्न, धन बिन गति भूखन बिलखन वारी॥
कुल मर्य्यादा बस अनसन व्रत मानहुँ ठाने।
बिना प्रकासे भेद मरन निज भल जिन जाने!!
घर बैठे बिन काज, बिना माँगे प्रति मासहिँ।
दै दै द्रव्य‖ दियो तुम तिन जीवन की आसहिँ॥
तृप्त आतमा तिनकी आसीसत न अघाती।
साँझ, प्रात, दुपहर, निशीथ सब दिन अरु राती॥

क्यों न देहिँ आसीस, दुखी गन ईस सनावैं?
क्यों न प्रसन्न प्रजा सब सुयश तिहारो गावैं?
जौ न दया करि आप दान दरियाव बहाती।
कोटिन प्रजा हिन्द की अन्न बिना मरि जातीं!!

* Hospital. § Sago-seed. साबूदाना।
‖ Indian Famine Charitable Relief Fund.—Object III.

तासों नहिं यह अन्न दान, धन दान तिहारो ।
है असंख्य जन प्रान दान को सुयश सुखारो ॥
अति बिसाल यह धरम नहीं कोऊ जाके सम ।
याको फल तोहि ईस देइ है अवसि अनूपम !!

पर उपकार विचार प्रजा पालन हित केवल ।
नहिं भूलेहुं यामैं कहुँ लखियत स्वारथ को छल ॥
नहिं काहू की जाति, धरम लेबे को आसय ।
नहिं तेरो निज मत प्रचारिबे को या विधि नय ॥
नहिं तौ पेट चपेट परी परजा भारत की ।
कितो न बनि क्रस्तान* दसा खोती आरत की ?

पकी पकाई रोटी निज हाथनि दिखरावत ।
सहज पादरी लोग दुखिन के चित ललचावत ॥
कुलाचार, मर्य्याद, जाति, धर्म्महुँ प्रयास बिन ।
लै लेते उनके द्वै द्वै रोटी दै द्वै दिन !!
कहते सब सों "हम कोटिन क्रस्तान बनाये ।
प्रभु ईसू को मत भारत मैं भल फैलाये" ॥
यूरप, अमेरिका बासी कब गुनते यह बल ?
समझत वे तो "यह इनके उपदेसहि को फल" ।

अन्न हीन, धन हीन, पसुन सों हीन, हीन गति ।
कृषिकारन की दीन दसा लखि करि करुना अति ॥

---

* Christian. खृष्टीय मतानुयायी ।

तिनहिं फेरि कृषि काज चलावन हेतु विपुल धन* ।
दियो लेन हित मोल बैल, हल, बीज आदिकन ॥
बीज वपन, जल सिञ्चन के हितहू दीन्यो धन ।
या विधि उजरे फेरि बसायो तुम कृषिकारन ॥

दीनन दान रूप धन दीन्यो† नहिं फेरन हित ।
लटे समर्थन कहँ दीन्यो ऋन‡ रूप यथोचित ॥
दियो जिमीदारनहिँ न केवल कृषिकारन कहँ ।
बाँध बँधावन, कूप खुदावन हित चाहत जहँ ॥

नहिं औरनही दै सहायता आप बुआई ।
निजहु असंख्य जलासय प्रजा हेतु बनवाईं ॥
नहर अनेक, असंख्य सरोवर, कूप खुदाये ।
अनावृष्टि दुख रोकन हित बहु बाँध बंधाये ॥
फिर इन उपकारन को वारापार कहाँ है?
तेरो निर्मल यश जहँ लखियत भरो तहाँ है !!
क्यों न होय कृत कृत्य प्रजा लखि यह प्रबन्ध सब ?
फेरि न यों अकाल व्यापन भय वे समझत अब ॥

---

(७)

याहू सोँ अति भारी विपति महामारी§ की ।

---

* Indian Famine Charitable Relief Fund.—Object IV,

† Gratuitous village relief.

‡ तक़ावी ([illegible])

§ Bubonic plague.

जिन दच्छिन पच्छिम भारत में अति ख्वारी की ॥
हरयो हजारन मनुज प्रान यह उत उतरतही ।
हाहाकार मचाय दियो निज पायँ धरतही !!
डस्यो बम्बई नगर उजार्यो बिन मानव करि ।
दियो करैंची अरु पूनाहूँ में विपत्ति भरि !!
तिहि प्रदेस में तौ फैल्यो याको डर भारी ।
पै काँपी भारत की सारी प्रजा तिहारी !!
ताहू के नासन में आप ध्यान अति दीन्यो ।
करि २ विविध उपाय बहुत बल ताको छीन्यो ॥
प्रजा प्रान रच्छा हित व्यय करि आप अधिक धन ।
करि प्रबन्ध बहु भाँति दियो तेहि इत नहिं आवन ॥
देस देस सों प्रबल डाकूर लोग बुलाये ।
भाँति भाँति के नये नये औषध प्रगटाये ॥

उचित औषधी औषधकारी लखि हरषानी ।
जीवन की निज आस प्रजा पुनि मन में आनी ॥
होत देखि निर्मूल* महामारी इत यतननि ।
लगीं असीसन प्रजा तोहि साँचे सुख सों सनि !!

या विधि प्रजा पालनी जब है बानि तिहारी ।
भारत प्रजा जाय नहिं तब क्यों तुम पर वारी ?
लाख दुखी हू तेरे हरष न क्यों हरषावै ?

---

* गर्मी के दिनों में इसका वेग घट जाता है, अतः इसकी न्यूनता देख निर्मूल
ताही को भाषा हुई।

औरहु तेरी वृद्धि हेतु किन ईस मनावै ?
राजभक्ति की सहज बानि विधि नै जिहि दीनी।
दुखहू लहि जिन नृपविरोधिता कबहुं न कीनी ॥
सो तेरे उपकार भार सों दबी अधिकतर ।
लखत न तो सम सुखद राज हू जो पुहुमी पर ॥
तेरे हरष बीच तिनके हिय हरष कहानी ।
कहौ कौन सों जाय भला किहि भाँति बखानी ?

---

(८)

नहिं धन इनके पास जाहि व्यय करि प्रगटावैं
पै मन सों सब भाँति सबै आनन्द मनावैं ॥
कछुक धनी धन खरचत राजभक्ति दिखरावत ।
हीरक जुबिली को अस्मारक* चिन्ह बनावत ॥
लिखि अभिनन्दन पत्र† प्रतिष्ठित गन, पण्डित जन ।
पठवत सेवा मैं तेरी अति ह्वै प्रसन्न मन ॥
प्रति नगरन की प्रजा बधाई तार पठावत ।
कवि गन कविता विरचि ताहि तुम पर प्रगटावत ॥
कोउ साजत निज भवन, कलस कदली तोरन सों ।
ध्वजा पताका चित्र लगाये चहुं ओरन सों ॥
नाच करावत कोऊ, इष्ट अरु मित्र जिमावत
कोऊ, अग्निक्रीड़ा‡ मिसि कोउ निज हरष दिखावत ॥

---

* Memorial. स्मारक वा यादगार।
† Address.
‡ आतशबाज़ी [آتشبازی]

पै यह कोड़ी* कोटि तिहारी प्रजा बिचारी।
दीन हीन सब भांति तुमैं दिखरावन वारी॥
नहिं राखत यह सामग्री, मेरी महरानी !
केवल निज हिय राजभक्ति पूरित लासानी† ॥
जा मैं लाखन धन्यवाद, आसीस करोरन।
राजत तेरे हित, हे जननि! हरष संग थोर न॥
जो उन ऊपर कथितन सों नहिं कोऊ विधि कम।
जा सम सत नृप काज उपायन और न उत्तम॥
लेहु ताहि फल अतुल ईस याको तुहिं देहै!
दीनन की आसीस व्यर्थ कबहूँ नाहिं ह्वै है!!

चारहु जुबिली कथित और भोगहु तुम अब सोँ!
बिना विघ्न, बिन रोग, रहित शोगादिक सब सोँ!!
सपरिवार सुख सों राजहु जग राज दराजहिँ!
निज प्रजानि के हेतु और साजहु सुख साजहिँ!!
भारत भारत दसा अहै जो बची बचाई!
ताहि दूरि करि बेगि करहु आनद अधिकाई!!

---

(६)

यदपि तिहारे राज भयो भारत अति उन्नत।
भागे सों अब सब कोऊ सब विधि सुख पावत॥

---

* संख्या में २० अर्थात बीस करोड़।

† (لاثانی) अन्य वा अनूपम।

पै दुख अति भारी इक यह जो बढ़त दीनता ।
भारत में सम्पति की दिन दिन होत छीनता ॥
महँगी बढ़तहि जात, घटत है अन्न भाव नित ।
जातैं कोऊ सुख सामग्री नहिँ सुहात चित ॥
बढ़त प्रजा नित यहाँ, घटत पै उद्यम सारे ।
बिन उद्यम धन मिलै न, बिन धन मनुज बेचारे ॥
सुख सुकाल हू जिन्हैं अकालहि के सम भासत ।
कई कोटि जन सहत, सदा भोजन की साँसत ॥

एकहि समय आधही पेट लहत जे भोजन ।
मोटो, रूखो, सूखो, अन्न लोन बिन रोज न ॥
तेरे राज करमचारी न्यायी उदार मत * ।
साँची भारत दसा ससंकित ह्वै अस भाषत ॥
बहु संकीरन हृदय जाहि हठकै झुठलावैं ।
ह्वै स्वारथ सोँ अन्ध बेसुरी तान लगावैं ॥

मनहुँ उभय दल मत सच झूँठ तुमहिँ समझावन
हित, कराल दुष्काल को भयो अब के आवन ॥
जिहि तैं प्रगट भयो तुम पर भारत की दुर्गति ।
लखि निज प्रजा दुखी त्यौं भईं दुखित चित सोँ अति ॥
अब सोचौ जो भयो एकही बरस अबरसन ।
लगी भारती प्रजा अन्न दरसन कहँ तरसन !!

---

* As was said by :—Lord Macaulay, Lord Cromer, Lord Lawrence, Lord Mayo, Sir John Shore, Colonel Marriot, Mr. Giberne, Mr. Bourdillon, Mr. Froude, Mr. Grant Duff, &c. &c.

रही अन्न सों भरी पुरी जो भूमि सदाहीं ।
कैयौ बरस अबरसन सों जो रीतत नाहीं ॥
तामैं अन्य दीप सों अन्न नहीं जौ आवत ।
तौ अबके भारत मनुजन कहँ कौन जियावत ?
त्यों धन मोल लेन हित दौनन जौ नहिँ देती ।
दान, सहायक काज ब्याज सुधि आप न लेती ॥
भूखन मरिकै प्रजा सेष बचती चौथाई ।
सूनी सी यह भारत भूमी परत लखाई ॥

कै सुछन्द ब्यापार* जोग नहिँ भूमी भारत ।
जो यहि दियो बनाय इते दिन मैं यों आरत ॥
यह अति सूछम भेद आप ऊपर प्रगटावन ।
कै हितही दुष्काल को भयो अबके आवन ?

कै स्वारथ रत अन्य दीप बासी ब्यापारी ।
के हित आयो देन सत्य सिच्छा यह भारी ?
जो ढोवत धन अन्न यहाँ सों ह्वै अति निर्दय ।
नहिँ राखत याके मरिबे जीबे को कछु भय ।
उद्यम लेस न रहन देत इत भूलि एकहू ।
बची खुची जो कारीगरी न ताहि नेकहू ॥
पैठन देत देस अपने मैं करि बहु छल बल ।
अपनी कारीगरी सकेलत इत न लेत कल ॥
या विधि जिन निःसत्व दियो करि हाय देस यह !

* Free trade. अर्थात् बिना चुङ्गी वा राजकर के व्यापार का व्यवहार ।

जाही के परभाय चैन दिन रैन करत वह ॥
नहिँ जानत जे जब ह्वै है भारत ही आरत ।
याके आश्रित रूप तुरत ह्वै हैँ वे गारत ॥
शिल्प और विज्ञान मिलित उद्यम सब उनके ।
सारथ होत अन्न धन भारतही के चुनके ॥
सो जब भारत आपहि पेट पीर सोँ मरि है ।
तब उनके कर कहो काढ़ि कौड़ी को धरि है ?

अथवा बीत्यो तुमहिँ राज राजत इतने दिन ।
भारत पैँ, हे राज राज रानी ! विवाद बिन ॥
कियो सबै विधि तुम उन्नति याकी बिन संसय ।
दै विद्या, सुख सामग्री, हरि कै दुष्टन भय ॥
न्याय राज थाप्यो, परजन स्वछन्द बनायो ।
सिच्छित जन अरु धनिकन के मन जो अति भायो !!
रामराज सम राज तिहारो जिन कहँ दीसत ।
दै दै धन्यवाद वे तुम कहँ रोज असीसत ॥
पै जेते जन दीन हीन धन और हीन मति ।
जिनहिँ दियो विधि भिच्छाटन तजि और नाहिँ गति ॥
जिन नहिँ जान्यो सुखद राज तेरे को कछु सुख ।
नहिँ जिन खोल्यो तुमहिँ असीसन काज कबहुँ मुख ॥
राज गहन दिन सोँ आसा जिनकी ही लागी ।
साम्राज्य पद गहन महा उत्सव सुनि जागी ॥
पै वराटिका लहि न एकहू जो मुरझानी ।

बीती जुबिली* मैं जो सूखी सी दरसानी ॥
हरित करन फिरि आसालता न उनकी केवल ।
आयो यह दुष्काल देन तिन माहिं फूल फल ॥

इतने दिन की कसर सहित आसीस देन हित ।
ब्याज† सहित बहु धन्यवाद देवे को नित नित ॥
उन दीनन की दीनता अधिक आनि बढ़ाई ।
तुमसों उनकी जननि प्रान रच्छा करवाई ॥
जामै हीरक जुबिली‡ मैं तेरी भारत की ।
सकल प्रजा इक संग हुलसि हिय सों सब मत की ॥
देहि बधाई तोहि अनन्दित ईस मनावै ।
नवल कृपा तुव पाय बचे सब दुख बिनसावै ॥

---

(१०)

लखियत तैसेही सब के उर आनद भारी ।

---

* (Jubilee.) यहूदियों के इतिहास के अनुसार प्रति पचास वर्ष के अन्त में समस्त दास अर्थात् गुलाम (slaves) छोड़ दिए जाया करते थे; अर्थात् उनकी सेवाकी परमावधि मानकर वे दासत्व से मुक्त किये जाते और भूम्याधिकारियों की च्युत भूमि पुनः अपने पुराने स्वामियों के पास लौटा दी जाया करती थी अर्थात् उसके भोग की भी परमावधि मानली जाती ।

इस प्रकार महाराणी के सकुशल पचास वर्ष पर्य्यन्त राज्य भोगने से मानो एक प्रकार इसे भी पूर्णावधिमान महोत्सव मनाने से यहां इसका तात्पर्य है । और साम्प्रतिक व्यवहार में सामाजिक आनन्दोत्सव में इस शब्द का प्रयोग होता है ।

† बियाज वा सूद । (سود)

‡ Diamond Jubilee. अर्थात् महाराणी के परार्ध राज्य के प्रथम दशवर्ष और राज्य करने के कारण अधिक हर्ष का हेतु हो विशेषण युक्त यह और भी प्रकर्षता प्रकाशक शब्द बना० अर्थात परार्धराज्य के प्रथम पञ्चमांश की समाप्ति सम्बन्धी महोत्सव ।

पैयत सबहि कतज्ञ बनो तेरो इहि बारी ॥
बीते सब उत्सव सोँ तेरे इहि अवसर पर।
प्रमुदित परम लखात भारती प्रजा नारि नर ॥
जिनके उर उत्साह भार को सकि न सँभालत।
काँपत है भूकम्प* ब्याज यह भूमी भारत ॥

कि धौँ राजराजेसुरी तुमहिँ सी सुखदानी।
की हीरक जुबिली मैँ मोद महा मनमानी ॥
सुभग समय पर उचित उछाह जगहि दरसावन।
जोग न जानत निज सुत गन के पास बिपुल धन ॥
मानहानि अनुमानि हहरि यह थरथर काँपत।
कहा करै, सोऊ कछु थिर न सकत करि निज मत ॥

कै तुव सासन समय भेद लखि भाग देस गति ॥

---

* ता० १२ जून सन् १८९७ ई० शनिवार का महाभूकम्प जो कई दिन आगे और पीछे तक भी आता रहा, और प्रायः भारत भर में जिसका संचाल हुआ। किन्तु बंगाल और बिहार में तो उसने अत्यन्त भङ्कर रूप धारण किया और आसाम का तो मानो सर्वनाश ही कर डाला। भारतवर्ष की राजधानी कलकत्ते के जिसे प्रासाद नगर (city of palace) कहते हैं, असंख्य हर्म्य और प्रासादों को छिन्न भिन्न और भग्न कर डाला। जिसके कारण अनेक स्थानों पर करोड़ों की हानि हुई० लाखों घर गिरे और सहस्रों मनुष्य दबे और मरे० असंख्य मनुष्य बिना घर, धन और परिवार के होगये। अनेक स्थान पर बड़े २ ताल और सरोवर पट गये; और अनेक स्थानों पर बड़े २ गड़हे और नवीन ताल बन गये। अनेक जनस्थान और नगर भाग गृह शून्य हो गये० असंख्य गृह भूमि में धंस गये० और भयङ्कर शब्द के साथ नदियों में ऊंची २ लहरें उठीं, पर्वत भी गिरे जिसके नीचे कई ग्राम दब गये !

जामैं ग्रेट बृटेन कीन्यो अपनी अति उन्नति ॥
भयो रंक सों राव संक जग मैं थाप्यो जिन ।
भर्‌यो भूरि धन, बल, विद्या, गुन, कला कौस बिन ॥
जाकी प्रजा मान, अभिमान भरी सुख सम्पति
सों प्रफुलित मन विहरत जानत जगत हीन मति ॥
अरु पुनि वाही समय बीच निरखति गति अपनी ।
दीन हीनहीं बनी बिलखि भारत की अवनी ॥
काँपि काँपि यह लेत उसास होय अति कातर ।
जानि दैव प्रतिकूल आनि उर मैं बिसेष डर ॥

साठ बरस की आस निरासा करि जनु मानी ।
अरु पुनि दयावती तुम सी अनहोनी रानी
के सासन सुविसाल बीच जब गयो दुःख नहिं ।
तब हरि है को नहिं जानत अब सेष कलेसहिं ?
यह गुनि कै यह आपुहि अपनो ही तन* ताड़ति ।
आँसुन की झरि लावति औ सिर छार उड़ावति ॥

कै धौं अपनी उन्नत पूरब दसा विचारी ।
रह्यो प्रताप जबै याको फैल्यो दिसि चारी ॥
अजहूँ लौं आस्त जग याको रह्यो बराबर ।
काहू की यापैं कृतज्ञता रही न तिल भर ॥
सो दुर्दैव प्रभाय हाय ! बनि गयो भिखारी !

---

* लाखों घरों और पर्वत का गिरना, पचासों हाथ लम्बी दरारें फटकर धरती से धुआं और नौ २ दस २ हाथ ऊंचे कचजल और रेतकी फुहारें निकलीं जिससे समीपस्थ खेतों पर पांच २ छः २ फुट ऊंची रेत भर गई ।

जग सों भिच्छा* लियो खोय भरमाला भारी ॥
पाय और सों दान प्रान राख्यो यह अबके ।
खोय मान अभिमान कान करि सनमुख सब के ॥
चहत न सो भारत रहि कोउ संग आँख मिलावन ।
ढाढ़ मारि भू फारि† चहत पाताल सिधावन ॥

किधौं चहत हिय चीरि‡ देवि! तुम कहँ दिखरावन ।
उर अन्तर की राज भक्ति यह सहज सुभायन ॥
साधारन भूकम्प जाहि कारन बिन जाने ।
कहैं लोग विज्ञान आदि मत मानि पुराने ॥
कै तुव हरष हरषि यह बिहँसि उठी ठठाय कै ।
करत निछावरि बहु गृह§ भूषन गन गिराय कै ॥

होय जु कछु कारन सो तो यहई जिय जानत ।
पै हम तो बस निश्चय एक यही अनुमानत ॥
लखि तुव सुखदानी रानी को आनद भारी ।
आनन्दित ह्वै काँपत भारत भूमी प्यारी ॥

---

* अर्थात् भारत के इस महा दुर्भिच्छ में कुछ स्वदेशी और विशेष विदेशी अर्थात् अन्यान्य द्वीपों के सामान्य लोगों ने धर्म्मार्थ धनकी सहायता की जिसकी संख्या १५२०७६४३८॥) २ हुई और जिसका नाम (Indian Famine charitable Relief Fund.) वा भारतीय दुष्कालिक दीनोद्धारार्थ दातव्यधन पुञ्ज पड़ा; और जिससे यहां के दीनों का बड़ा उपकार हुआ।

† अनेक स्थानों पर मीलों लम्बी भूमिका फटना भयङ्कर शब्द के संग बड़ी उत्कट दुर्गन्धि और ऊष्णता का उबलना, सहस्रों घरों का भूमि के भीतर धँस जाना।

‡ ऐसे २ दरारें फटे जिनमें नीचे का निर्मल पानी दिखलाई पड़ता था।

§ निज शोभा के हेतु बड़े २ प्रासाद और हर्म्य।

तब याके सुत सबै भये इहि छन आनन्दित ।
हाय भला तब यह क्यों नहिं अतिसय प्रसन्न चित ?

---

(११)

निश्चय सुभ अवसर यह हम सब कहँ सुखदायक ।
जो आनन्द मनावैं हम, है वाके लायक ॥
देहिँ जु कछु बकसीस आप, लायक यह वाके ।
मागैं जो हम, लायक यह देवि के ताके ॥
चहत न हम कछु और, दया चाहत इतनी बस ।
छूटैं दुःख हमरे, बाढ़ै जासों तुमरो जस ॥

जिहि ममत्व अरु जिहि प्रकार सों ग्रेट बृटेन पर ।
कियो राज तुम अब लगि दया दिखाय निरन्तर ॥
ताही विधि, ताही ममत्व, तिहि दया भाव सन ।
अब सों राजहु भारत पर दै और अधिक मन !!
कीनी सब प्रकार जिमि ग्रेट बृटेन की उन्नति ।
तैसहिँ भारत की करियै भरि कै सुख सम्पति ॥
वाकी प्रजा समान स्वत्व, आयुध, अधिकारहिँ ।
विद्या, कला, नीति, विज्ञान, प्रबन्ध विचारहिँ ॥
हम भारत वासिन कहँ देहु दया करि, देवी !
उभय प्रजा सम होहिँ सुखी, सम सासन सेवी !!
भारत के धन अन्न और उद्यम व्यापारहिँ ।
रच्छहु, वृद्धि करहु सौंचे उन्नति आधारहिँ ॥

बरन भेद, मतभेद, न्याय को भेद मिटावहु ।
पच्छपात, अन्याय बचे जे तिनहिँ निवारहु ॥

पूरब शासन समय साठ बत्सर को भारी ।
पाय भयो कृतकृत्य बृटेन अति कृपा सिहारी ॥
भारत की बारी आवै अब अति सुखदाई ।
उतर शासन या हीरक जुबिली सों पाई ॥
करहु आज सों राज आप केवल भारत हित ।
केवल भारत के हित साधन मैं दीने चित ॥
पूरन मानव आयु लहौ तुम भारत भागनि ।
पूरन भारतीन की करत सकल सुख स[illegible] ॥
सबहू भारत मैं सुख, सम्पति, धन, विद्या, बल ।
धर्म्म, सुनीति, सुमति, उछाह, ब्यापार ज्ञान भल ॥
तेरे सुखद राज की कीरति रहै अटल इत ।
धर्म्म राज, रघु, राम प्रजा हिय मैं जिमि अंकित ॥

इति ।